शोध–प्रस्ताव

खोरठा काव्य में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

पीएच. डी. उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रारूप की रूपरेखा

संकाय : जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग
स्नातकोत्तर खोरठा विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची
2025

शोध निर्देशक

डॉ0 अरविन्द कुमार
सहायक प्राध्यापक
खोरठा विभाग
डोरंडा कॉलेज, राँची
राँची विश्वविद्यालय, राँची
arvindkr8383@gmail.com
8789028431

शोधार्थी

नितेश कुमार चौधरी
जे.आर.एफ / नेट
स्नातकोत्तर खोरठा विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची
niteshprem2885@gmail.com
9525970090

शोध–प्रस्ताव

विषय : खोरठा काव्य में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रस्तावना

झारखंड खनिज और वन संपदा के आच्छादित एक अद्‌भुत प्रदेश है। मानव प्रजाति और भाषा–संस्कृति के संदर्भ में भी यह एक अनूठा भू–भाग है। यहाँ तीन प्रजाति के मानव समुदाय सह अस्तित्व के साथ हजारों बरसों से रहते आ रहे हैं। इन मूल झारखंडी समुदायों के द्वारा तीन अलग–अलग भाषा परिवार (आग्नेय, द्रविड़ और आर्य) की भाषाओं का प्रयोग किया जाता है। खोरठा झारखंड के इन्हीं मूल निवासियों की एक विचार–विनिमय का पारंपरिक साधन है। खोरठा मूलतः आर्य परिवार की भाषा है। किंतु अपने भाषा–क्षेत्र में जनजाति और सदान अर्थात गैर जनजाति दोनों समुदाय द्वारा मातृभाषा और स्थानीय संपर्क भाषा के रूप में व्यवहार किया जाता है। खोरठा बोलनेवाले झारखंड के अलावे पं. बंगाल, असम, आंदमान तथा विदेशों में मॉरीशस, सूरीनाम आदि स्थानों में पाए जाते हैं। सैकड़ों वर्षों से सामान्य बोलचाल में व्यवहार होनेवाली खोरठा को शिक्षा के लिए एक भाषा के रू‍प में मान्यता मिली है। अब इसे एक भाषा विषय के रूप में झारखंड राज्य की विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षाओं में भी मान्यता मिली हुई है।

खोरठा एक प्राचीन लोक भाषा है इसलिए इसका लोक साहित्य बहुत समृद्ध है। बीते तीन सौ वर्षों से इसमें शिष्ट साहित्य लेखन का कार्य सतत विकासमान है। साहित्य की प्राचीन और आधुनिक विधाओं में प्रतिभावान रचनाकार अपनी लेखनी खोरठा साहित्य के बहुमुखी विकास में योगदान करते आ रहे हैं। पद्य और गद्य दोनों रूपों में अनेक कृतियाँ खोरठा साहित्य भंडार को सुशोभित कर रही हैं। पद्य साहित्य के अंतर्गत प्रबंधकाव्य साहित्य की प्राचीन विधा है। खोरठा में इस विधा में अनेक मूल्यवान ग्रंथ रचे गए हैं। जो खोरठा साहित्य की समृद्धि का महत्वपूर्ण आधार है।

खोरठा में काव्य रचना का इतिहास तीन सौ बरसों से अधिक पुराना माना जाता है। रामगढ़ के पाँचवी पीढ़ी के सतरहवीं सदी के राजा दलेल सिंह को खोरठा का पहला कवि माना जाता है। इनके तीन काव्य कृति की सूचना मिलती है। शिवसागर, रामरसार्णव और गोविंद लीलाऽमृत। परंतु ये काव्य अभी तक छपकर प्रकाशित नहीं हो पाए हैं। तब से अब तक लगभग डेढ़ दर्जन प्रबंध काव्य की रचना हो चुकी है और वे प्रकाशित भी हैं। ऐसे प्रकाशित प्रबंधकाव्य ग्रंथों के नाम हैं– रघुवर विनय (कतरास गढ़ के राजा गंगानारायण सिंह), रामकथामृत, अगनि परीखा, समाधान(श्रीनिवास पानुरी), दामुदरेक कोराञ, मइछगंधा (शिवनाथ

प्रमााणिक), धरतीक देवता बिरसा भगवान (धनपत महतो गणपति), डींड़ाक डोंआनी (बंशीलाल बंशी), भीस्मेक सत (फूलचंद महतो) माराफरी (जनार्दन गोस्वामी व्यथित), ओंगठा (महेंद्रनाथ गोस्वामी सुधाकर), मुक्तिक डहर (श्यामसुंदर महतो श्याम), बावाँ हाँथेक रतन (सुकुमार), देख हामर देस (परितोष कुमार प्रजापति) आदि। ऐसे काव्यों में कवियों ने अनेक भाव–विचारों को अभिव्यक्त किया है। जिनमें सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना का संदेश मुख्य भाव–विषय बनकर आया है।

खोरठा में इसके साथ–साथ फुटकर(स्फूट) काव्य की रचनाएँ होती रही हैं। फुटकर कविताएँ विभिन्न संग्रहों, संकलनों की पुस्तकों और पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित पायी जाती रही हैं। ऐसी फुटकर कविताओं की संख्या हजारों में होंगी। जिसके भीतर अनेक तरह के मानव हितैषी भाव–विचार व्यंजित हुए हैं।

प्रेरणा– डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय से खोरठा भाषा विषय से एम0 ए0 करते हुए मुझे खोरठा भाषा साहित्य के सभी रूपों के बारे में जानने का अवसर मिला था। इस दौरान दामुदरेक कोराञ, मुक्तिक डहर, बाँवाँ हाँथेक रतन जैसे काव्यों के अध्ययन का मौका मिला। मुझे ज्ञात हुआ कि खोरठा में मुक्तक काव्य और प्रबंधकाव्य की रचना भी पर्याप्त संख्या में हुई है। कुछ काव्य रचनाओं के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि खोरठा के काव्य सामाजिक और सांस्कृतिक विषय को मुख्या रूप से लेकर चले हैं। लेकिन इस दृष्टिकोण से इसकी अलग से साहित्यिक मूल्यांकन से संबंधित कोई सामग्री नहीं मिल पायी। इस क्रम में मुझे यह ज्ञात हुआ कि इस पर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। तब से मेरे मन यह इच्छा हुई थी कि क्यों न इस विषय पर शोध अध्ययन किया जाए। खोरठा से एम.ए. करने बाद जब मैंने यूजीसी से नेट/जेआरएफ के लिए चयन हुआ तो मुझे अपनी उस अभिलाषा को साकार करने का अवसर मिला। मैंने खोरठा के प्रबंध काव्य पुस्तकों के ऊपर शोध करने के लिए खोरठा के कई विद्वानों से आवश्यक चर्चा की। जिनमें डीएसपीएमयू के अपने गुरुदेव विद्वान प्रोफेसर डॉ बिनोद कुमार राँची विश्वविद्यालय के खोरठा विभाग के अध्यक्षा डॉ कुमारी शशि, प्रध्यापिका डॉ अर्चना कुमारी और विभाग के अन्य प्राध्यापकों से परामर्श किया तो उन्होंने इस विषय पर शोध कार्य करने की सहमति जताई। साथ ही, इस संदर्भ में महत्वपूर्ण मार्गदर्शन भी दिया। तब मैंने इस कार्य को विधिवत् करने के लिए शोधनिर्देशक के रूप में मुझे सतत मार्गदर्शन के लिए डोरंडा कॉलेज, राँची के खोरठा विषय के विद्वान प्राध्यापक डॉ अरविन्द कुमार जी से संपर्क किया। आदरणीय डॉ अरविन्द कुमार ने मेरी प्रार्थना को स्वीकार कर मुझे कृतार्थ किया।

परिकल्पना :

किसी शोध कार्य को करने के पूर्व उससे संबंधित एक सोच आवश्यक होती है। संबंधित कार्य की योजना और उसके लिए किये जाने वाले कार्य और इससे प्राप्त परिणाम की

एक पूर्व कल्पना होती है। यद्यपि यह स्थायी नहीं होता है। लेकिन शोध की दिशा तय करने और उसके निष्पादन के लिए यह महत्वपूर्ण होता है। इसी को शोध की परिकल्पना कहा जाता है। अंग्रेजी में इसे हाइपोथिसिस कहा गया है।

प्रस्तावित विषय पर शोध कार्य से संबंधित मेरी परिकल्पना यह है कि मैं खोरठा के वैसे काव्य कृतियों का सांगोपांग अध्ययन कर उसमें निहित समाज और संस्कृति विषयक भावों और विचारों को विवेचन–विश्लेषण कर सकूँ। इस क्रम में मैं यह उभारने की कोशिश करूंगा कि कवि ने अपने काव्य में किस प्रकार से समाज में व्याप्त कुरीतियों, विसंगतियों, कुविचारों और अवांछित सोच व क्रियाकलापों को सामने रखकर उनके उन्मूलन के प्रति चेतना भरने का प्रयास किया है। साथ ही शोध के दूसरे पक्ष के अनुसार खोरठा के काव्यों में अभिव्यंजित झारखंडी संस्कृति, भारतीय संस्कृति और समग्र मानव हिताय संस्कृति के प्रति कवियों की भावना को उजागर करने का प्रयास होगा। इसके लिए मैं पहले खोरठा भाषा में लिखित उन काव्यों का चयन करूंगा जो खोरठा साहित्य जगत में अधिक चर्चित रहे हैं और जिनमें मेरे शोध से संबंधित विचारों की प्रधानता रही है। साथ वैसे काव्य का अनुशीलन भी मैं आवश्यक समझूंगा जो प्रकाशित होकर भी किसी कारण से पाठकों के बीच आ नहीं पाए हों। तत्पश्चात् उन काव्यों में व्यक्त विचारों को गहनता से जानने का प्रयास करूंगा, कवि के विचारों, संदेशों को उजागर करना चाहूंगा और साथ ही संबंधित रचनाओं की साहित्यिक मूल्य के साथ ही समाज और संस्कृति के हित में वैचारिक और भावनात्मक महत्व को विश्लेषित करने का प्रयास करूंगा। इस प्रयास में कोई पूर्व धारणा नहीं रखते हुए शोध से प्राप्त धारणाओं को व्यस्थित ढंग से प्रस्तुत करना मेरी परिकल्पित योजना है।

औचित्य : साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं मानव को अनेक समुचित ज्ञान और आत्मबोध कराने का साधन भी है। काव्य मनीषियों ने काव्य का प्रयोजन कांता सम्मित उपदेश बताया है। यानी सही सीख देने के लिए पत्नी की तरह प्रेम लेपेटी बातें करना। कवि गण अपनी रचनाओं में इसी प्रकार मानव समाज को सही दिशा देने के लिए काव्य लालित्य के साथ अपने विचारों को रखते हैं। खोरठा के कवियों ने भी साहित्य के इसी गुण को अपनाकर अनेक काव्यों की रचना की हैं। जिन काव्यों में समाज में व्याप्त बुराइयों और अच्छाइयों से अवगत कराते हुए समाज को अधिक सुंदर बनाने के लिए सचेत करने का काम किया है।

वैसे ही मानव और मानव समाज को सुंदर बनाने के लिए संस्कृति एक अनिवार्य तत्व है। इस संदर्भ में झारखंड और भारत की संस्कृति मानव समाज के लिए काफी महत्वपूर्ण हैं। खोरठा कवियों ने इस बात को अपने काव्यों में प्रमुखता से रखने का काम किया है। जिसे समाज के सम्यक विवेचना के साथ सामने लाना आवश्यक प्रतीत होता है।

खोरठा के कवि समाज और संस्कृति के लिए कितने संवेदनशील रहे हैं और उनका चिंतन इस दिशा में समाज के समक्ष क्या–क्या विचार देता आया है और समाज में इसकी क्या उपयोगिता है; इस बात को जानना आवश्यक समझता हूँ।

क्षेत्रीय भाषा के साहित्य(काव्य) में निहित समाज और संस्कृति विषयक विचाारों की उच्चता और उसके गुणवत्ता को व्यापक अन्य भाषा–भाषी क्षेत्रों तक अवगत कराने हेतु इस तरह के शोध की नितांत आवश्यकता है।

महत्व :

- खोरठा शिष्ट साहित्य को समृद्ध करने में पद्य साहित्य का सर्वाधिक योगदान है। पद्य साहित्य के अंतर्गत काव्य आते हैं। खोरठा के प्रबंधकाव्य और मुक्तक दोनों रूपों ने समाज हित की बातों को प्रमुखता दिया है। इस अध्ययन से इस संदर्भ में खोरठा भाषा में हुए काव्य सृजन कार्य से सुधी समाज अवगत हो सकेगा।
- खोरठा काव्य रचनाओं में अभिव्यक्त खोरठा कवियों के समाज और संस्कृति विषयक चिंतन और विचारों को दुनिया के सामने लाया जा सकेगा।
- इस तरह के शोधकार्य से खोरठा काव्य साहित्य के मूल्य और महत्व का व्यापक प्रचार–प्रसार हो सकेगा।
- प्रस्तावित शोध कार्य के संपन्न होने पर खोरठा के काव्यों में अभिव्यक्त संबंधित विचारों और भावनाओं पर एक विश्लेषित सामग्री विद्यार्थियों, शोधार्थियों को मिल सकेगी और इस दिशा में खोरठा साहित्य की अन्य विधाओं में विश्लेषणात्मक अध्ययन को बढ़ावा मिलेगा।
- इस शोध के अवलोकन से सुधी व साधारण पाठकों में खोरठा के काव्य के रसास्वादन की रुचि के परिस्कार के साथ ही विचाारों को आत्मसात कर समाज को सुंदर बनाए रखने की चेतना का भी विकास होगा।
- खोरठा भी भारत देश की एक भाषा है और इसका साहित्य भी देश का साहित्य है। लेकिन एक क्षेत्रीय भाषा में लिखे होने के कारण यह खोरठा क्षेत्र तक ही सीमित रह जाता है। खोरठा काव्य के साथ भी यही बात लागु होती है। इसलिए खोरठा जैसी क्षेत्रीय भाषा के काव्य में निहित विचारों और उसके गुण–धर्म को व्यापकता देकर देश–विदेश के साहित्य के सुधी विद्वानों का ध्यान आकृष्ट किया जा सकेगा।

किसी भी शोध कार्य का समाज पर संभावित प्रभाव सकारात्मक ही वांछनीय होता है। प्रस्तावित शोध कार्य से भी मेरा अनुमान सकारात्मक प्रभाव का है।

शोध विधि :

किसी भी बड़े शोधकार्य में शोधनिर्देशक के साथ ही संबंधित साहित्य के विशेषज्ञों का मार्गदर्शन अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। मैं अपने प्रस्तावित शोध कार्य के निष्पादन के लिए शोधनिर्देशक और शोध समिति के सदस्यों का सतत मार्गदर्शन लेना आवश्यक समझूंगा।

चूँकि मेरा प्रस्तावित शोध कार्य साहित्यिक कोटि के अंतर्गत आता है। इसके लिए मैं निम्नांकित आवश्यक शोध विधियों का उपयोग करूंगा –

क. अवलोकन विधि

ख. अनुशीलन विधि

ग. आलोचनात्मक विधि

घ. विश्लेषण विधि

इस शेध कार्य के लिए अपेक्षित उपकरण –

1. संपर्क व संवाद हेतु दूरभाष
2. टाईप हेतु संगणक/लेपटॉप
3. कागज–कलम–दफती
4. फोटोग्राफी व रिकार्डिंग हेतु स्मार्ट फोन

शोध–प्रारूप

(अध्यायीकरण)

विषय : खोरठा काव्य में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रस्तावना :

भूमिका

प्रेरणा

परिकल्पना

औचित्य

महत्व

शोध प्रविधि

अध्याय –1

काव्य की अवधारणा और रूप

1. काव्य की परिभाषा और उसका स्वरूप
2. काव्य के भेद
3. आधुनिक युग में काव्य की अवधारणा और उसके रूप

अध्याय–2

सामाजिक चेतना की अवधारणा :

1. समाज और उसका स्वरूप
2. खोरठा भाषा क्षेत्र के समाज का स्वरूप
3. सामाजिक चेतना की अवधारणा और दिशा
4. खोरठा क्षेत्र में सामाजिक चेतना संबंधी गतिविधियाँ

अध्याय –3.

सांस्कृतिक चेतना की अवधारणा :

1. संस्कृति की अवधारणा
2. खोरठा क्षेत्र (झारखंड) की लोक–संस्कृति
3. सांस्कृति चेतना की अवधारणा
4. खोरठा क्षेत्र (झारखंड) में सांस्कृतिक पुनर्जागरण संबंधी गतिविधियाँ

अध्याय –4

खोरठा काव्य–रचनाओं में सामाजिक चेतना के स्वरः

1. समाजिक कुरीतियों–कुप्रथाओं के उन्मूलन के विचार
2. समाजिक भेद–भाव पर प्रहार
3. नारी चेतना और नारी उत्थान की पक्षधरता
4. शिक्षा जागरूकता के स्वर
5. पाखंड और अंधविश्वास के विरूद्ध चेतना
6. सामाजिक मूल्यों के सुदृढ़ीकरण के विचार

अध्याय –5

खोरठा काव्य –रचनाओं में सांस्कृतिक चेतना के स्वर :

1. झारखंडी व भारतीय संस्कृति के प्रति प्रेम की व्यंजना
2. झारखंडी व भारतीय संस्कृति का महिमा –गान
3. संस्कृति संरक्षण की जागरूकता के स्वर
4. अति आधुनिकता और अपसंस्कृति पर प्रहार
5. सांस्कृतिक मूल्यों के सुदृढ़ीकरण के विचार

अध्याय – 6

खोरठा में सामाजिक व सांस्कृतिक चेतना विषयक खंडकाव्य और उनके विचार

1. दामुदरेक कोराञ – शिवनाथ प्रमाणिक
2. डींड़ाक डोंआनी – बंशीलाल बंशी
3. ओंगठा – महेंद्रनाथ गोस्वामी सुधाकर
4. सुलकसाय – विश्वनाथ प्रसाद नागर
5. मइछगंधा – शिवनाथ प्रमाणिक

अध्याय – 7

खोरठा में सामाजिक व सांस्कृतिक चेतना विषयक फुटकर काव्य संकलनः

1. आँखीक गीत – श्रीनिवास पानुरी
2. एक मउनी फूल – संतोष कुमार महतो
3. रूसल पुटुस – संपादक : शिवनाथ प्रमाणिक
4. एक पथिया डोगल महुआ – संपादक : संतोष कुमार महतो

5. क्कर नामें लिखब गीत – पंचम महतो
6. माटिक घरें उगल चाँद – शांति भारत

उपसंहार

परिशिष्ट

संदर्भ ग्रंथों की सूची

आधार ग्रंथों की सूची

पूर्व के शोधकार्यों की सूची

नोटः आवश्यकता अनुसार शोध प्रारूप में आंशिक परिवर्त्तन प्रार्थनीय होगा।

शोध निर्देशक **शोधार्थी**

डॉ अरविंद कुमार नितीश कुमार

सहायक प्राध्यापक जेआरएफ/नेट

खोरठा विभाग

डोरंडा कॉलेज, राँची

आधार ग्रंथों की सूची :

1. कुमारी डॉ अर्चना , खोरठा का शिष्ट साहित्य : एक अध्ययन
   प्र. व. 2015, प्रकाशक –प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन(राँची)
2. कुमार डॉ अरविंद , खोरठा और 2. नागपुरी भाषा का तुलनात्मक वैज्ञानिक अध्ययन
   2014 झारखंड झरोखा,राँची
3. झा ,डॉ. ए. के., खोरठा सहित सदानिक बेयाकरन 2011 झारखण्ड झरोखा, राँची
4. झा ,डॉ. ए. के. ,खोरठा भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन 2012 झारखण्ड झरोखा, राँची
5. झा ए . के, खोरठाक काठें पइदेक खँड़ी 1983 खोरठा ढाकी छेतर कमिटी
   कोठार, रामगढ़।
6. दांगी डॉ आनंद किशोर साठोत्तरी खोरठा काव्य : एक अध्ययन 2014
   झारखण्ड झरोखा, राँची
7. ओहदार डॉ बी. एन. ,खोरठा भाषा एवं साहित्य (उद्भव एवं विकास)
   2012 खोरठा भाषा–साहित्य अकादमी, रामगढ़।
8. ओहदार डॉ बी. एन. ,सम्पूर्ण खोरठा भाषा एवं साहित्य 2018 मार्गदर्शन
   पब्लिकशन (राँची)
9. बंशी लाल बंशी खोरठा दर्पण 1998 बोकारो खोरठा कमिटी
10. दिनमणि दिनेश कुमार ,टोटल खोरठा 2021 शिवांगन पब्लिकेशन, राँची।
11. प्रभाकर डॉ गजाधर महतो, खोरठा भाषा एवं साहित्य, 2017 सफल प्रकाशन, राँची।
12. पानुरी श्री निवास, आँखिक गीत, 2011, प्रकाशक नारायण महतो।
13. महतो संतोष कुमार, एक मउनी फुल 2003 रामधन प्रकाशन।
14. प्रमाणिक शिवनाथ, रूसल पुटुस ,1985 बोकारो खोरठा कमिटी।
15. महतो संतोष कुमार, एक पथिया डोंगल महुआ 2023, रामधन प्रकाशन
    गांगजोरी, बोकारो।

संदर्भ ग्रंथ :

1. ओंगठा कवि– महेंद्रनाथ गोस्वामी सुधाकर, प्रकाशक–
2. दामुदरेक कोराञ, कवि–शिवनाथ प्रमाािणिक, प्रकाशक – झारखंड झरोखा, राँची 2014
3. मइछगंधा कवि–शिवनाथ प्रमाािणिक, प्रकाशक – झारखंड झरोखा, राँची 2013,
4. धरतीक देवता बिरसा भगवान कवि–धनपत महतो गणपति, प्रकाशक वही, 1991
5. डींड़ाक डोंआनी कवि– बंशीलाल बंशी, प्रकाशक – झारखंड झरोखा 2017
6. भीस्मेक सत, कवि– फूलचंद महतो, प्रकाशक – वही
7. माराफरी, कवि – जनार्दन गोस्वामी व्यथित, प्रकाशक – बालीडीह खोरठा कमिटी, 2001
8. मुक्तिक डहर, कवि–श्यामसुंदर महतो श्याम, प्रकाशक – ...
9. बावाँ हाँथेक रतन कवि–सुकुमार,
10. देख हामर देस, कवि–परितोष कुमार प्रजापति, प्रकाशक– खोरठा साहित्य संस्कृति परिषद्, आदि।